Toppersnotes®
Unleash the topper in you

# RAS

# राजस्थान प्रशासनिक सेवा

## राजस्थान लोक सेवा आयोग

भाग - 7

## भारत की अर्थव्यवस्था

SIERRA INNOVATIONS

# विषयसूची


| S No. | Chapter Title | Page No. |
|---|---|---|
| 1 | आर्थिक वृद्धि –विकास तथा मापन | 1 |
| 2 | मौद्रिक नीति | 12 |
| 3 | मुद्रास्फीति | 20 |
| 4 | वित्तीय मध्यस्थ | 27 |
| 5 | बजट | 37 |
| 6 | राजकोषीय नीति और कराधान | 44 |
| 7 | सब्सिडी और सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) | 56 |
| 8 | कृषि | 61 |
| 9 | उद्योग क्षेत्र | 80 |
| 10 | सेवा क्षेत्र | 95 |
| 11 | ऊर्जा | 100 |
| 12 | परिवहन | 117 |
| 13 | कौशल विकास और रोजगार सृजन | 125 |
| 14 | सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण | 136 |

# 1 CHAPTER आर्थिक वृद्धि -विकास तथा मापन

## पिछले वर्षों में पूछे गये प्रश्न

प्रश्न 1. विश्व खुशहाली रिपोर्ट - **2024** के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें: **(2024)**

**A.** भारत का स्थान **140** से अधिक देशों में **126** था, जो कि इसके पड़ोसी देशों चीन, नेपाल, पाकिस्तान, म्यांमार, श्रीलंका और बांग्लादेश से भी निम्न है।

**B.** पिछले कुल वर्षों में भारत के स्थान में कुछ विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है, यह बताता है कि जनसंख्या के कल्याण और खुशी में सुधार के लिये सीमित प्रगति ही हुई है।

निम्न कूटों का प्रयोग करते हुए सही उत्तर का चुनाव कीजिये :

**(A)** केवल एक **(B)** केवल **B**

**(C) A** और **B** दोनों **(D)** न तो **A** और न ही **B**

प्रश्न **2.** निम्नलिखित में से किस वर्ष भारत में चालू मूल्यों और स्थिर कीमतों दोनों पर सकल राष्ट्रीय आय और शुद्ध राष्ट्रीय आय की वार्षिक वृद्धि दर नकारात्मक थी**?** **(2024)**

**(**A) **2018-19** **(**B) **2019-20**

**(**C) **2020-21** **(**D) **2021-22**

प्रश्न **3.** इनमें से कौन-सा एक सार्वजनिक वस्तु नहीं है? **(**2023)

(1) सरकारी प्रशासन (2) राष्ट्रीय रक्षा

(3) कारें (4) सड़कें

(5) अनुत्तरित प्रश्न

प्रश्न **4.** 2023 के ग्लोबल हैप्पीनेस इंडेक्स में भारत की रैंक क्या है? **(**2023)

(1) 115 (2) 118

(3) 126 (4) 136

(5) अनुत्तरित प्रश्न

प्रश्न **5.** 2021 के वर्ल्ड हैप्पीनेस इंडेक्स में भारत की रैंक क्या थी? **(**2021)

(1) 141 (2) 129

(3) 121 (4) 139

प्रश्न **6.** बाजार मूल्य पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (N.N.P. MP) क्या है? **(**2021)

(1) बाजार मूल्य पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद - विदेश से प्राप्त शुद्ध आय

(2) बाजार मूल्य पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद - अंतरण भुगतान

(3) बाजार मूल्य पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद - अवमूल्यन

(4) बाजार मूल्य पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद - सब्सिडी

Toppersnotes Unleash the topper in you

प्रश्न 7. राष्ट्रीय आय लेखांकन में 'आधार वर्ष' का अर्थ क्या है? (2021)

(1) वह वर्ष जिसकी आय का उपयोग नाममात्र GDP की गणना के लिए किया गया है

(2) वह वर्ष जिसके मूल्य का उपयोग नाममात्र GDP की गणना के लिए किया गया है

(3) वह वर्ष जिसके मूल्य का उपयोग वास्तविक GDP की गणना के लिए किया गया है

(4) वह वर्ष जिसकी आय का उपयोग वास्तविक GDP की गणना के लिए किया गया है

प्रश्न 8. मानव विकास रिपोर्ट 2015 के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है? (2016)

A. भारत का स्थान 188 देशों में 130वां है।

B. HDI जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और PCI के सूचकांकों पर आधारित है।

C. BRICS के अन्य देशों की तुलना में भारत का स्थान सबसे निम्न है।

कौन-सा/से कथन सही है?

(1) केवल A और B (2) केवल B और C

(3) केवल B (4) A, B और C सभी

प्रश्न 9. 1951-52 से 2015-16 के दौरान स्थिर कीमतों पर भारत की प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि दर सबसे अधिक किस वर्ष में थी? (2016)

(1) 2015-16 (2) 2010-11

(3) 2007-08 (4) 2014-15

**विश्लेषण:** इस अध्याय में प्रश्न राष्ट्रीय आय लेखांकन, विभिन्न रिपोर्टों और सूचकांकों जैसे ग्लोबल हैप्पीनेस इंडेक्स और मानव विकास रिपोर्ट, और सार्वजनिक वस्तुओं एवं निजी वस्तुओं के बीच अंतर से जुड़े हुए हैं। यह अध्याय इन अवधारणाओं और तथ्यों को समग्र रूप से कवर करता है, जिसमें स्टैटिक या तथ्यात्मक सामग्री और इन विषयों से संबंधित वर्तमान घटनाएं भी शामिल हैं।

## आर्थिक वृद्धि और आर्थिक विकास

### आर्थिक वृद्धि:

- किसी देश में एक निश्चित अवधि के दौरान वस्तुओं और सेवाओं के वास्तविक उत्पादन तथा उनके मोद्रिक मूल्य में हुई वृद्धि ।
- इसे सकल घरेलू उत्पाद या प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि जैसे मात्रात्मक कारकों द्वारा मापा जाता है।
- यह उच्च उत्पादकता को दर्शाता है लेकिन यह जरूरी नही की जीवन की गुणवत्ता और समानता में भी सुधार हुआ हो ।

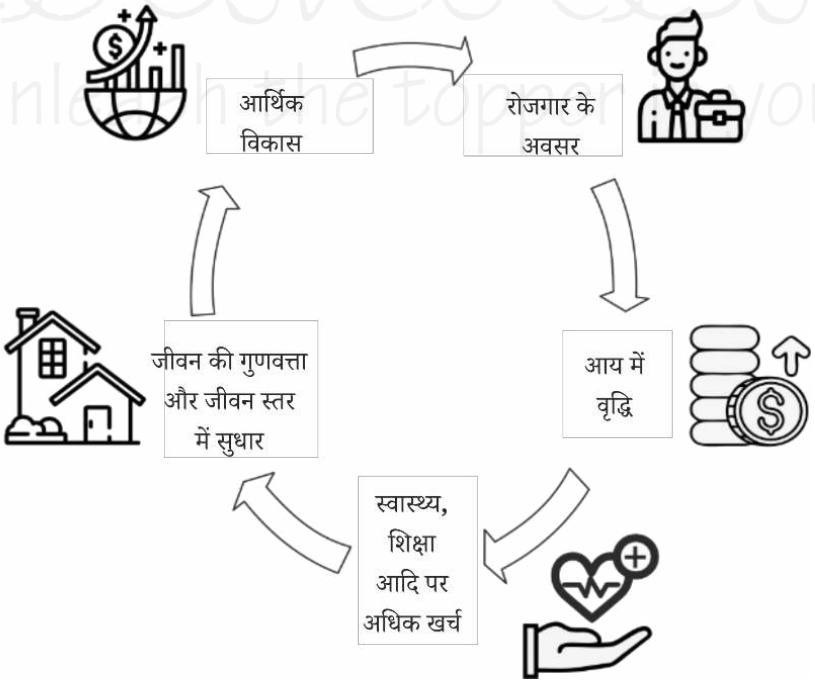


### आर्थिक विकास:

- यह एक व्यापक अवधारणा है, जो जनसंख्या के जीवन की समग्र गुणवत्ता और उनके कल्याण में सुधार को सम्मिलित करती है। आर्थिक विकास को मापने के लिए एचडीआई (मानव विकास सूचकांक), लिंग-संबंधी सूचकांक, गरीबी सूचकांक (एचपीआई), शिशु मृत्यु दर, साक्षरता दर आदि जैसे गुणात्मक उपायों का उपयोग किया जाता है।

- यह किसी देश में जीवन की गुणवत्ता में प्रगति को दर्शाता है।

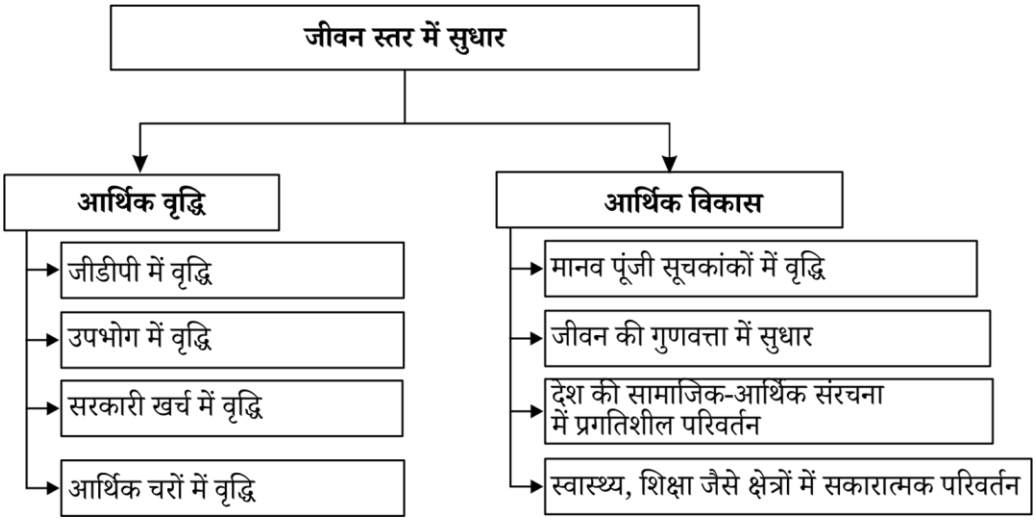


**अर्थव्यवस्था की संरचनात्मक संरचना**

1. **प्राथमिक क्षेत्र**: यह उन उद्योगों को संदर्भित करता है जो प्राकृतिक संसाधनों के निष्कर्षण या कच्चे माल के उत्पादन में लगे होते हैं। उदाहरण में मछली पालन, कृषि, खनन आदि शामिल हैं।
2. **द्वितीयक क्षेत्र**: यह उन उद्योगों को शामिल करता है जो उपयोगी या तैयार माल के निर्माण में लगे होते हैं। उदाहरण में भारी उद्योग जैसे इस्पात, ऑटोमोबाइल और हल्के उद्योग जैसे खाद्य और सौंदर्य प्रसाधन शामिल हैं।
3. **तृतीयक क्षेत्र**: यह उन उद्योगों को संदर्भित करता है जो व्यापारों या उपभोक्ताओं को सेवाएँ प्रदान करते हैं। उदाहरण में स्वास्थ्य सेवा, बीमा आदि शामिल हैं।
4. **चतुर्थक क्षेत्र**: यह उद्योगों को शामिल करता है जो ज्ञान के निर्माण और प्रसार पर केंद्रित होते हैं। उदाहरण में अनुसंधान और विकास, शिक्षा आदि शामिल हैं।
5. **पंचम क्षेत्र**: यह अर्थव्यवस्था में निर्णय लेने के उच्चतम स्तरों को संदर्भित करता है। उदाहरण में नीति आयोग के सदस्य, वैज्ञानिक, न्यायधीश, नोबेल पुरस्कार विजेता आदि शामिल हैं।

## आर्थिक विकास का मापन

### I. पारंपरिक तरीके

**राष्ट्रीय आय**

राष्ट्रीय आय यह किसी वित्तीय वर्ष के दौरान देश के नागरिकों द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य होता है, जिसमें मूल्यह्रास को समायोजित कर लिया जाता है। राष्ट्रीय आय के कई महत्वपूर्ण पहलू होते हैं, जिनमें सकल घरेलू उत्पाद (GDP), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP), शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP), प्रति व्यक्ति आय, व्यक्तिगत आय और व्यय योग्य आय (डिस्पोजेबल आय) शामिल हैं।

### 1. सकल घरेलू उत्पाद (GDP)

- एक निर्धारित वित्तीय वर्ष के दौरान देश की घरेलू या आर्थिक सीमा (territory) में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य सकल घरेलू उत्पाद (GDP) कहलाता है।
- GDP की गणना के लिए घरेलू या आर्थिक सीमाओं कई तत्व शामिल होते हैं, जैसे:
  - ✓ किसी देश की भौगोलिक सीमाएँ, जिनमें उसका प्रादेशिक जल भी शामिल होता है।
  - ✓ उस देश के विदेशों में स्थित दूतावास, वाणिज्य दूतावास और सैन्य अड्डे।
  - ✓ देश के निवासियों द्वारा स्वामित्व और संचालित किए जाने वाले जहाज और विमान।

- नियमित अवधियों पर अनुमानित (जैसे त्रैमासिक, या वार्षिक)।
  - ✓ भारत के संदर्भ में यह अवधि 1 अप्रैल से 31 मार्च तक होती है।
- GDP की गणना केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO), जो सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) के अधीन है, द्वारा की जाती है।
- यह एक 'मात्रात्मक अवधारणा' है जो देश की अर्थव्यवस्था की आंतरिक क्षमता को दर्शाती है।

**GDP की सीमाएं**

- यह मात्रात्मक अवधारणा है, गुणात्मक नहीं।
- पूँजीगत लाभ को GDP में शामिल नही किया जाता ।
- बहिष्करण तथा समावेश की समस्या ।
- जीडीपी यह जानकारी नहीं देता है कि जनसंख्या के बीच आय कैसे वितरित की गयी है।
- यह एक निश्चित क्षेत्र (territory) की सीमा तक ही सीमित होती है।
- जीडीपी केवल उत्पादित नई वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को मापता है। सेकेंड-हैंड सामान से जुड़े लेनदेन, जैसे प्रयुक्त कारों या फर्नीचर की पुनर्विक्रय, जीडीपी गणना में शामिल नहीं हैं।
- GDP यह नहीं बताता कि क्या उत्पादित किया जा रहा है और इसमें घरेलू कार्य जैसे बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की देखभाल आदि भी शामिल नहीं है।

**GDP की गणना के तरीके**

| **GDP गणना के तरीके** | | |
|---|---|---|
| व्यय विधि<br>उपभोग<br>+<br>निवेश<br>+<br>सरकारी व्यय<br>+<br>शुद्ध निर्यात (अर्थात निर्यात - आयात)<br>**सूत्र: C + I + G + (X – M)** | आय विधि<br>किराया<br>+<br>वेतन(मजदूरी)<br>+<br>ब्याज<br>+<br>लाभ | मूल्य वर्धित/आउटपुट विधि<br><br>सभी वस्तुओं और सेवाओं का अंतिम मूल्य<br>–<br>मध्यवर्ती लागत |

**नाममात्र GDP (Nominal GDP)** – जब GDP में शामिल वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्य का आकलन **वर्तमान वर्ष की कीमतों** पर किया जाता है तो उसे **वर्तमान कीमतों पर GDP** या **नाममात्र GDP** कहा जाता है।

**वास्तविक GDP (Real GDP)** – जब GDP में शामिल वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य का आकलन **आधार वर्ष की कीमतों** पर किया जाता है तो उसे **स्थिर कीमतों पर GDP** या **वास्तविक GDP** कहा जाता है।वास्तविक GDP में वृद्धि का अर्थ वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि होता है। अतः स्थिर कीमतों पर GDP अथवा वास्तविक GDP की गणना हमें किसी अर्थव्यवस्था के आर्थिक प्रदर्शन की सही तस्वीर प्रदान करती है।

| **GDP की गणना के विभिन्न पहलू** | |
|---|---|
| **GDP डिफ्लेटर**<br>➢ यह वास्तविक GDP और नाममात्र GDP का अनुपात है।<br>➢ यह दर्शाता है कि आधार वर्ष से चालू वर्ष की कीमतों में कितनी वृद्धि हुई है। | **GDP वृद्धि दर**<br>➢ यह मापता है कि अर्थव्यवस्था कितनी तेजी से बढ़ रही है। |

| | |
|---|---|
| ➢ GDP डिफ्लेटर मुद्रास्फीति का मापक है तथा यह **CPI, WPI** की तुलना में अधिक सटीक व व्यापक है परंतु यह कम प्रचलित है क्योकि इसकी गणना त्रिमाही आधार पर की जाती हैं जबकी **CPI, WPI** मासिक आधार पर जारी किए जाते है। | ➢ यह लगातार दो वर्षों या तिमाहियों में GDP के परिवर्तन को मापता है। |
| **बाजार मूल्य पर GDP ($GDP_{MP}$)**<br>**इसे नाममात्र जीडीपी भी कहते है।**<br>➢ साधन लगत (FC) पर शुद्ध घरेलू उत्पाद + मूल्यह्रास + शुद्ध अप्रत्यक्ष कर - सब्सिडी। | **कारक लागत पर GDP ($GDP_{FC}$)**<br>➢ यह किसी वस्तु के उत्पादन की कुल लागत है, जिसमें भूमि, श्रम, पूंजी और उत्पादक का मुनाफा शामिल होता है।<br>➢ $GDP_{FC} = GDP_{MP} -$ अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी |

## 2. शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP)

➢ यह किसी देश की भौगोलिक सीमाओं के अंदर उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का शुद्ध मूल्य होता है ।

➢ NDP की गणना करने के लिए मशीनरी, मकान और कार जैसी राष्ट्रीय पूंजी परिसंपत्तियों के मूल्यह्रास के मूल्य को GDP से घटाया जाता है ।

**शुद्ध घरेलू उत्पाद (**NDP) = **सकल घरेलू उत्पाद (**GDP) – **मूल्यह्रास**

➢ NDP हमेशा GDP से कम होगी ।

➢ मूल्यह्रास की विभिन्न दरों के कारण NDP का उपयोग वैश्विक स्तर पर नहीं होता है।

## 3. सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)

➢ यह वह कुल मौद्रिक मूल्य है, जो किसी देश के निवासियों द्वारा एक विशिष्ट अवधि के भीतर सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन से प्राप्त होता है, चाहे वह उत्पादन देश के भीतर हो या विदेश में। इसमें विदेश में किए गए निवेश से अर्जित आय को शामिल किया जाता है, लेकिन देश के भीतर विदेशी निवासियों द्वारा किए गए निवेश से होने वाली आय को घटाया जाता है।

**GNP = GDP + विदेश से प्राप्त निवल आय (NFIA)**

## 4. शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP) या राष्ट्रीय आय

➢ यह सकल राष्ट्रीय उत्पाद में से मूल्यह्रास को घटाने के बाद सृजित आय है।

➢ यह किसी देश की सबसे शुद्ध आय है।

**NNP = GNP – मूल्यह्रास**

| | |
|---|---|
| **सकल घरेलू उत्पाद (GDP)** | GDP = किसी देश के एक वित्तीय वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का कुल योग। |
| **शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP)** | NDP = GDP – परिसंपत्तियों पर मूल्यह्रास। |
| **सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)** | GNP = GDP + विदेश से प्राप्त आय। |
| **शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)** | NNP = GNP – परिसंपत्तियों पर मूल्यह्रास।<br>NNP = GDP + विदेश से प्राप्त आय – परिसंपत्तियों पर मूल्यह्रास। |

## 5. प्रति व्यक्ति आय (PCI)

➢ प्रति व्यक्ति आय या प्रति व्यक्ति उत्पादन लोगों के जीवन स्तर को दर्शाने वाला एक संकेतक है

➢ एक देश. यह राष्ट्रीय आय को किसी देश की जनसंख्या से विभाजित करके प्राप्त किया जाता है।

**प्रति व्यक्ति आय = $NNP_{FC}$/जनसंख्या**

- **आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26:**
  - ✓ **वर्तमान या चालू कीमतें** = 219575
  - ✓ **स्थिर कीमतें** = 121968

स्थिर मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि दर वर्ष 1988-89 में सर्वाधिक (7.5%) थी जो वर्ष 2023-24 तक जारी रही। हालाँकि 2020–21 में भारत में चालू तथा स्थिर कीमतों दोनों पर सकल राष्ट्रीय आय और शुद्ध राष्ट्रीय आय की वार्षिक वृद्धि दर नकारात्मक रही।

## 6. व्यक्तिगत आय (PI)

- व्यक्तिगत आय वह कुल धन है जो व्यक्तियों और घर-परिवारों द्वारा किसी देश में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त किया जाता है, और यह आय प्रत्यक्ष करों से पहले की होती है।

## 7. प्रयोज्य आय (DI)

- प्रयोज्य आय का अर्थ उस वास्तविक आय से है जिसे उपभोग पर खर्च किया जा सकता है इस प्रकार, इसमें व्यक्तियों और परिवारों की आय शामिल होती है।

**DI = PI – प्रत्यक्ष कर**

## भारत में GDP गणना व्यवस्था

- जीडीपी गणना के लिए आधार वर्ष को पिछले आधार वर्ष 2004-05 से परिवर्तित करके 2011-12 कर दिया गया है।

**आर्थिक सर्वेक्षण 2025–26:**

- **सकल घरेलू उत्पाद (GDP):**
  - ✓ **वास्तविक GDP वृद्धि:** 7.4% (₹201.90 लाख करोड़), जबकि वित्त वर्ष 2024–25 में यह 6.5% (₹187.97 लाख करोड़) थी।
  - ✓ **नाममात्र GDP:** 8.0% (₹357.14 लाख करोड़), जबकि वित्त वर्ष 2024–25 में यह ₹330.68 लाख करोड़ थी, जो 8.0% की वृद्धि दर्शाती है।
- **सकल मूल्य वर्धन (GVA):**
  - ✓ **वास्तविक GVA:** ₹184.50 लाख करोड़, जबकि वित्त वर्ष 2024–25 के अंतिम अनुमान (PE) ₹171.87 लाख करोड़ थे, जो 7.3% की वृद्धि को दर्शाता है।
  - ✓ **नाममात्र GVA:** वित्त वर्ष 2025–26 में ₹323.48 लाख करोड़, जबकि वित्त वर्ष 2024–25 में ₹300.22 लाख करोड़ था, जो 7.7% की वृद्धि को दर्शाता है।
- **GVA / नाममात्र GDP में क्षेत्रवार हिस्सेदारी (वित्त वर्ष 26):**
  1. **कृषि (कृषि, पशुपालन, वानिकी एवं मत्स्य):** 15.2%
  2. **उद्योग:** 24.3%
     - खनन एवं उत्खनन: 1.4%
     - विनिर्माण: 12.8%
     - विद्युत, गैस, जलापूर्ति एवं उपयोगिताएँ: 2.3%
     - निर्माण: 7.8%
  3. **सेवाएँ:** 51.1%
     - व्यापार, होटल, परिवहन, संचार एवं प्रसारण: 15.8%
     - वित्तीय, रियल एस्टेट एवं पेशेवर सेवाएँ: 21.4%
     - लोक प्रशासन, रक्षा एवं अन्य सेवाएँ: 13.8%

**सार्वजनिक वस्तु और निजी वस्तु की अवधारणा**

**सार्वजनिक वस्तु:** सार्वजनिक वस्तुएं वे वस्तुएं हैं जो गैर-बहिष्कृत और गैर-प्रतिद्वंद्वी होती हैं, अर्थात किसी को भी उनके उपयोग से वंचित नहीं किया जा सकता है और एक व्यक्ति के उपयोग करने से दूसरे के लिए उनकी उपलब्धता कम नहीं होती है।
उदाहरण: राष्ट्रीय रक्षा, सार्वजनिक उद्यान, स्ट्रीट लाइट।

**निजी वस्तु:** निजी वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जो बहिष्कृत और प्रतिस्पर्धी हैं, जिन्हें कुछ लोगों को उपयोग करने से रोका जा सकता है और एक व्यक्ति के उपयोग से दूसरे के लिए उनकी उपलब्धता कम हो जाती है।
उदाहरण: कार, कपड़े।

# II. गैर-पारंपरिक तरीके

## 1. मानव विकास सूचकांक (HDI)

मानव विकास सूचकांक (HDI) को 1990 में पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब-उल-हक ने भारतीय अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन के साथ मिलकर विकसित किया था। इस सूचकांक का उपयोग संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा देशों के विकास स्तर को मापने के लिए किया जाता है।

HDI जन्म के समय जीवन प्रत्याशा, वयस्क साक्षरता दर और जीवन स्तर का एक समग्र सूचकांक है जिसे सकल घरेलू उत्पाद के लघुगणकीय कार्य के रूप में मापा जाता है, जिसे क्रय शक्ति समता (PPP) में समायोजित किया जाता है।

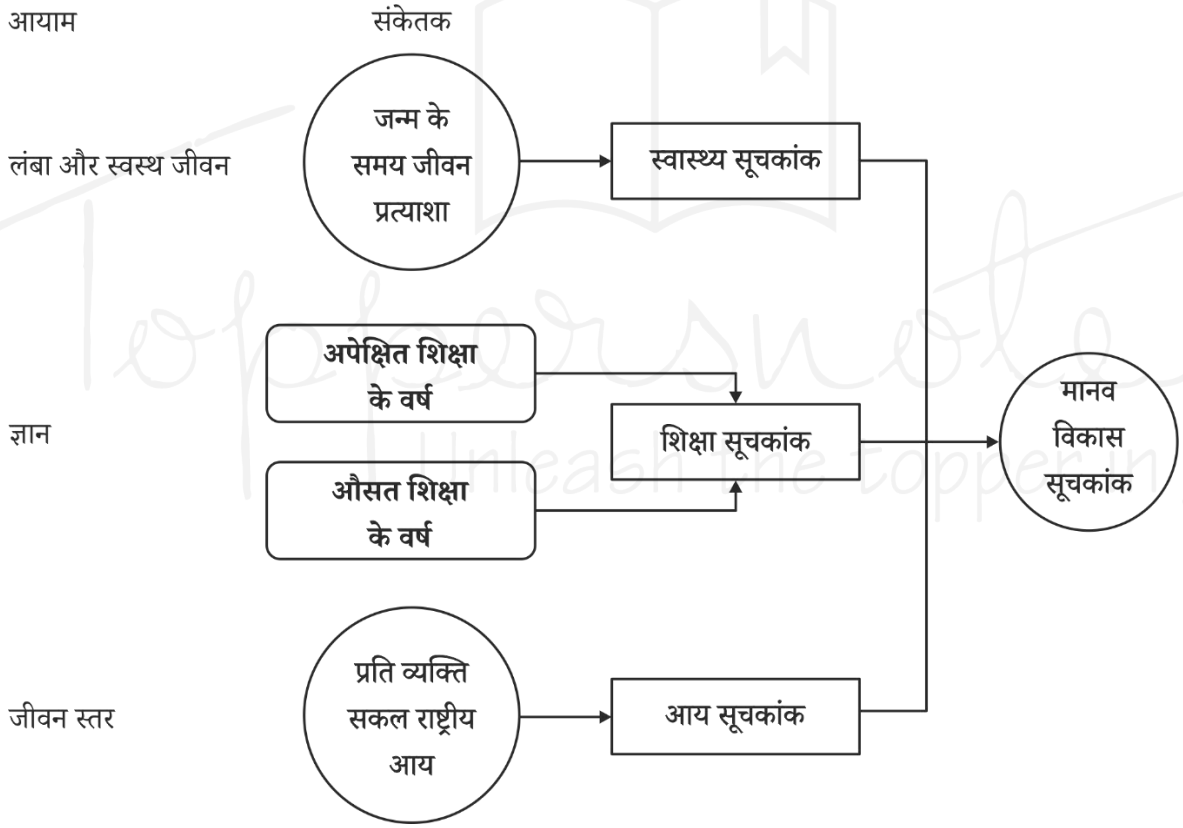


## मानव विकास सूचकांक (HDI)- 2025

- **थीम: -** "चयन का मामला: ए.आई. के युग में लोग और संभावनाएँ"
- **भारत का प्रदर्शन विभिन्न संकेतकों पर भारत की रैंक:** 130 वां स्थान HDI स्कोर: 0.685 भारत की जीवन प्रत्याशा 1990 में 58.6 वर्ष से बढ़कर 2023 में 72 वर्ष हो गई, जो अब तक की सबसे अधिक है। यह मजबूत महामारी के बाद की पुनर्प्राप्ति को दर्शाता है, जिसे राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों जैसे राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, आयुष्मान भारत, जननी सुरक्षा योजना, और पोषण अभियान से जोड़ा गया है।

- **भारत के पड़ोसी देशों का प्रदर्शन:** चीन (78वां), श्रीलंका (89वां), और भूटान (125वां) भारत से ऊपर रैंक करते हैं, जबकि बांग्लादेश (130वां) समान स्तर पर है। नेपाल (145वां), म्यांमार (150वां), और पाकिस्तान (168वां) भारत से नीचे रैंक करते हैं।
- **इसमें शीर्ष तीन देशों का स्कोर है -** (स्कोर): आइसलैंड (0.972), नॉर्वे (0.970), और स्विट्ज़रलैंड (0.970)।
- **सबसे खराब प्रदर्शन-** दक्षिणी सूडान

## 2. विश्व प्रसन्नता सूचकांक (World Happiness Index) –

वार्षिक विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट गैलप (Gallup), ऑक्सफोर्ड वेलबीइंग रिसर्च सेंटर, यूएन सस्टेनेबल डेवलपमेंट सॉल्यूशंस नेटवर्क (SDSN) और विश्व प्रसन्नता सूचकांक के संपादकीय बोर्ड की साझेदारी से तैयार की जाती है।

- इस रिपोर्ट में छह मुख्य कारकों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है: सामाजिक समर्थन, आय, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता, उदारता और भ्रष्टाचार की अनुपस्थिति।
- यह रिपोर्ट पिछले तीन वर्षों के औसत आंकड़ों (डेटा) के आधार पर एक प्रसन्नता (हैप्पीनेस) स्कोर देती है।

**विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट 2025 की मुख्य बातें:**

- शीर्ष रैंकिंग: फिनलैंड लगातार आठवीं वर्ष सूची में प्रथम स्थान पर है।
- सबसे खराब प्रदर्शन: अफगानिस्तान (147)
- भारत की रैंक: 118
- भारत की प्रसन्नता सूचकांक रैंकिंग उसके पड़ोसी देशों जैसे चीन (68 ), नेपाल (92 ), पाकिस्तान (109 ), और म्यांमार (126) से निम्न स्थिति में है।

**सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता (GNH)**

- देश के लोगों की ख़ुशी और खुशहाली का एक पैमाना।
- GNH के चार स्तंभ हैं
  1. सतत और न्यायसंगत सामाजिक-आर्थिक विकास
  2. पर्यावरण संरक्षण
  3. संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन
  4. सुशासन
- जीएनएच के नौ डोमेन मनोवैज्ञानिक कल्याण, स्वास्थ्य, समय का उपयोग, शिक्षा, सांस्कृतिक विविधता और लचीलापन, सुशासन, सामुदायिक जीवन शक्ति, पारिस्थितिक विविधता और लचीलापन और जीवन स्तर हैं।

## 3. वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट

- यह रिपोर्ट वर्ष 2006 से विश्व आर्थिक मंच (WEF) द्वारा जारी की जाती है।
- इस रिपोर्ट में 148 देशों में लिंग समानता को चार क्षेत्रों में मापा जाता है:
  - ✓ आर्थिक भागीदारी और अवसर
  - ✓ शैक्षिक उपलब्धि
  - ✓ स्वास्थ्य और उत्तरजीविता
  - ✓ राजनीतिक सशक्तिकरण

**वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट 2024**

**भारत की रैंक – 129/146**

**स्कोर – 64.1%**

**रैंक 1 – आइसलैंड**

### वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक 2025

**भारत:**

- **स्थिति: 131वाँ स्थान (**148 देशों में**)**
- **स्कोर: 0.644**

| उप–सूचकांक | भारत की रैंक | स्कोर |
|---|---|---|
| आर्थिक भागीदारी एवं अवसर | 144वाँ | 0.407 |
| शैक्षिक उपलब्धि | 110वाँ | 0.971 |
| स्वास्थ्य एवं उतरजीविता | 143वाँ | 0.954 |
| राजनीतिक सशक्तिकरण | 69वाँ | 0.245 |

**लोरेन्ज कर्व और गिनी गुणांक**

लोरेन्ज कर्व यह दिखाता है कि विभिन्न प्रतिशत जनसंख्या द्वारा अर्जित आय का अनुपात क्या है। 45 डिग्री की रेखा आय वितरण में पूर्ण समानता को दर्शाती है, जबकि कर्व वास्तविक वितरण को दिखाता है। जितना अधिक कर्व इस रेखा से दूर होगा, उतना अधिक असमान आय वितरण होगा।

- **गिनी गुणांक** लोरेन्ज कर्व से निकाला जाता है (यह 0 से 1 के बीच होता है): यह आय असमानता की डिग्री को मापता है। गिनी गुणांक 0 (पूर्ण समानता) से लेकर 1 (पूर्ण असमानता) तक हो सकता है।
- **गिनी गुणांक का 0 होना** मतलब है कि सभी व्यक्तियों की आय समान है, जबकि **गिनी गुणांक का 1 होना** यह दर्शाता है कि एक व्यक्ति को सारी आय प्राप्त हो रही है।

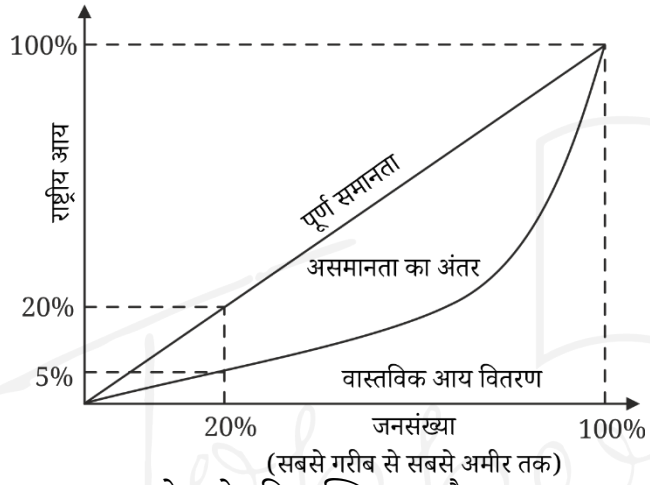


- **लॉरेंज़ वक्र** एक ग्राफ होता है जो किसी जनसंख्या में **आय या संपत्ति की असमानता** को दर्शाता है। यह **संचयी जनसंख्या हिस्से** के मुकाबले **संचयी आय हिस्से** को प्रदर्शित करता है।
- **45 डिग्री की तिरछी रेखा** पूर्ण समानता (परिपूर्ण समान वितरण) को दर्शाती है, जबकि उसके नीचे स्थित **लॉरेंज़ वक्र** वास्तविक वितरण को दर्शाता है।
- वक्र और तिरछी रेखा के बीच जितना अधिक अंतर (खाई) होगा, **असमानता उतनी ही अधिक** मानी जाती है।

- **कुज़नेत्स वक्र**

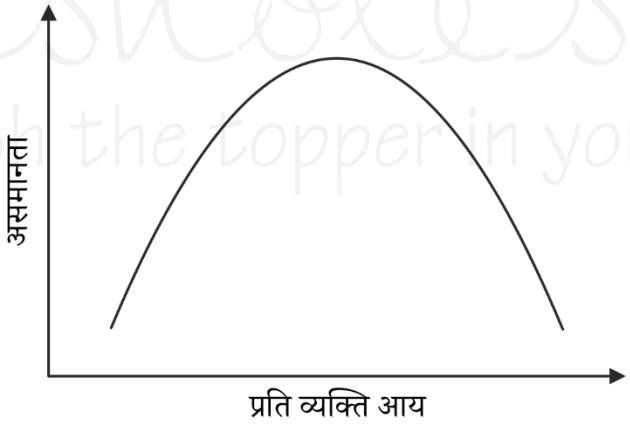


- साइमन कुज़नेत्स ने प्रति व्यक्ति आय और आय असमानता के बीच संबंध को **उल्टे-U (Inverted-U)** के आकार के रूप में समझाया, जिसे आगे चलकर **कुज़नेत्स वक्र** के नाम से जाना गया। इसी सिद्धांत के लिए उन्हें वर्ष **1971 में नोबेल पुरस्कार** प्रदान किया गया।
- इस सिद्धांत के अनुसार, जब कोई देश आर्थिक वृद्धि और औद्योगीकरण की प्रक्रिया से गुजरता है, तो प्रारंभिक चरण में **आय असमानता बढ़ती है**। किंतु जैसे-जैसे देश एक निश्चित स्तर के **आर्थिक विकास** तक पहुँचता है, उसके बाद **आय असमानता धीरे-धीरे घटने लगती है**।

## बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI)

इसे **2010 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)** और **ऑक्सफोर्ड गरीबी एवं मानव विकास पहल (OPHI)** द्वारा शुरू किया गया था।

यह **बहुआयामी गरीबी** का मापन करता है और इसमें **100 से अधिक विकासशील देशों** को शामिल करता है।

यह गरीबी के लिए **केवल आय को एकमात्र संकेतक मानने से आगे बढ़ते हुए** निम्नानुसार **तीन आयामों और 10 संकेतकों** के आधार पर वंचना का मापन करता है:

1. **शिक्षा:**
   - ✓ **विद्यालयी शिक्षा के वर्ष** – घर के वो सदस्य जो 6 वर्ष की औपचारिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाए।
   - ✓ **विद्यालयी उपस्थिति**– ऐसे बच्चे जो कक्षा 8 तक स्कूल में नामांकित नहीं रहे।।
2. **स्वास्थ्य:**
   - ✓ **पोषण** – 70 वर्ष से कम आयु के कुपोषित व्यक्तियों की संख्या।
   - ✓ **बाल मृत्यु** – पिछले 5 वर्षों में हुई बाल मृत्यु।
3. **जीवन स्तर: 6 संकेतक**
   - ✓ **बिजली, आवास, पेयजल** (या तो उपलब्ध न हो अथवा उन्नत पेयजल स्रोत घर से आने-जाने में **30 मिनट या उससे अधिक** की दूरी पर हो),
   - ✓ **स्वच्छता, खाना पकाने का ईंधन और संपत्ति** (प्रत्येक का **1/18 भार**, कुल **2/6 भार**)।

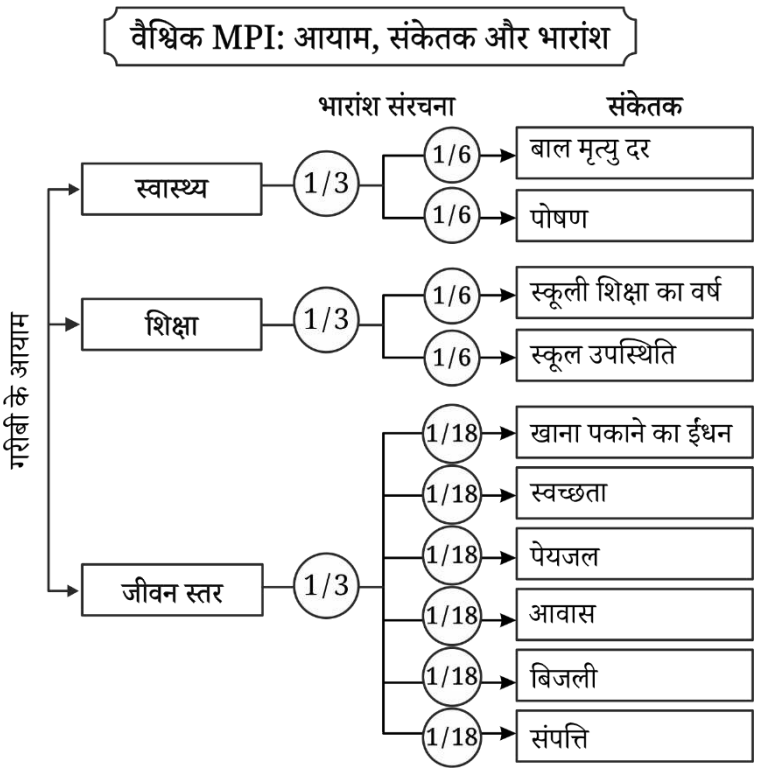


यदि कोई व्यक्ति **भारित 10 संकेतकों में से एक-तिहाई या उससे अधिक (अर्थात 33% या अधिक)** में वंचित है तो उसे **बहुआयामी रूप से गरीब** माना जाता है। जो व्यक्ति **आधे या उससे अधिक भारित संकेतकों** में वंचित होते हैं, उन्हें **अत्यधिक बहुआयामी गरीबी** में जीवन यापन करने वाला माना जाता है।

**वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक, 2025**

- ➢ **थीम:** "अतिव्याप्त कठिनाइयाँ: गरीबी और जलवायु जोखिम" (ओवरलेपिंग हार्डशिप्स: पोवर्टी एंड क्लाइमेट हज़ार्ड्स)
- ➢ **109 देशों** में **1.1 अरब लोग (18.3%)** तीव्र बहुआयामी गरीबी में जीवन यापन कर रहे हैं, जिनमें से **565 मिलियन उप-सहारा अफ्रीका** में और **390 मिलियन** लोग **दक्षिण एशिया** में शामिल हैं।
- ➢ **ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी: 962 मिलियन (83.7%)** गरीब लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं।
- ➢ **गरीबी में रहने वाले लोगों की सर्वाधिक संख्या वाले पाँच देश:**
  - ✓ भारत – **234 मिलियन**
  - ✓ पाकिस्तान – **93 मिलियन**
  - ✓ इथियोपिया – **86 मिलियन**
  - ✓ नाइजीरिया – **74 मिलियन**
  - ✓ कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य – **66 मिलियन**
- ➢ इन पाँच देशों में कुल गरीब जनसंख्या का लगभग **48.1%** रहता हैं।
- ➢ **18 वर्ष से कम आयु के लगभग 584 मिलियन बच्चे** अत्यधिक गरीबी में जीवन यापन कर रहे है जो वैश्विक स्तर पर सभी बच्चों का **27.9%** है, जबकि वयस्कों में यह अनुपात **13.5%** है।

## महत्वपूर्ण शब्दावली

**वित्तीय वर्ष :** यह 12 महीने की अवधि होती है जिसका उपयोग सरकारों और व्यवसायों द्वारा अपने लेखांकन और बजट की योजना बनाने के लिए किया जाता हैं, यह कैलेंडर वर्ष से भिन्न भी हो सकती है । उदाहरण के लिए, भारत में वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से शुरू होकर अगले साल के 31 मार्च तक चलता है।

**बाज़ार मूल्य:** यह वह अंतिम मूल्य है जिस पर कोई उत्पाद बाज़ार में बेचा जाता है। इसमें सभी मध्यवर्ती लागतें, सब्सिडी और कर शामिल होते हैं, जो कीमत को प्रभावित करते हैं।

साधन लागत (Factor Cost): यह किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन में उपयोग या उपभोग किए गए सभी संसाधनों और कारकों की कुल लागत है। इसका मतलब उत्पादन में लगे कारक जैसे श्रम, पूंजी, भूमि, प्रबंधन आदि की लागत से है।

**आधार वर्ष :** यह एक संदर्भ वर्ष होता है जिसका उपयोग समय के साथ आर्थिक और वित्तीय परिवर्तनों, जैसे मुद्रास्फीति GDP, आदि की तुलना करने के लिए किया जाता है। वर्तमान में भारत का आधार वर्ष 2011-12 है। हालाँकि, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने घोषणा की कि सरकार GDP का आधार वर्ष 2011-12 से 2022-23 में बदल रही है। संशोधित डेटा 27 फरवरी 2026 को जारी किया जाएगा।

**स्थिर मूल्य :** यह आधार वर्ष में प्रचलित कीमत को संदर्भित करता है

**मूल्यह्रास:** उपयोग, टूट-फूट या अप्रचलन के कारण समय के साथ किसी पूंजीगत परिसंपत्ति के मौद्रिक मूल्य में कमी।

**वस्तुएं:** यह वे भौतिक/मूर्त उत्पाद हैं जिन्हें छुआ और मापा जा सकता है। इसमें उपभोक्ता सामान (कपड़े, भोजन और इलेक्ट्रॉनिक्स) और पूंजीगत सामान (उत्पादन के लिए उपयोग की जाने वाली मशीनें और उपकरण जैसे कारखाने की मशीनें और वाहन) शामिल हैं।

**सेवाएं:** सभी अमूर्त गतिविधियाँ या लाभ जो उपभोक्ताओं को प्रदान की जाती हैं। इसमें

- **व्यक्तिगत सेवाएं:** जैसे बाल कटाना, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा
- **व्यावसायिक सेवाएं:** जैसे परामर्श, लेखांकन और कानूनी सेवाएं शामिल हैं।

वस्तुएं और सेवाएं मिलकर किसी अर्थव्यवस्था के उत्पादन का हिस्सा बनती हैं और ये उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने और आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण होती हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

# 2 CHAPTER मौद्रिक नीति

**पिछले वर्षों में पूछे गये प्रश्न**

प्रश्न 1. निम्न में से कौन सा उपाय चयनात्मक साख नियंत्रण के सम्बन्ध में सही विकल्प नहीं है? (2023)

(1) उधार सीमा (मार्जिन) में परिवर्तन (2) सरकारी प्रतिभूतियों को बेचना

(3) साख राशनिंग (4) नैतिक दबाव

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से किसने 2016 से 2021 की अवधि के लिए भारत में +/- 2 प्रतिशत के सहिष्णुता स्तर के साथ चार प्रतिशत मुद्रास्फीति लक्ष्य तय किया? (2023)

(1) भारतीय रिजर्व बैंक (2) भारत सरकार

(3) नीति आयोग (4) चौदहवाँ वित्त आयोग

**विश्लेषण:** PYQ रुझान इस अध्याय में अवधारणाओं को समझने के महत्व पर जोर देते हैं, इसलिए इन अवधारणाओं को विस्तार से समझाया गया है। इसमें महत्वपूर्ण संस्थाओं के नामों और उनकी संरचनाओं के साथ-साथ उनके काम करने के तरीकों की भी गहराई से समीक्षा की गई है।

मुद्रा वह वस्तु है जिसे विनिमय के माध्यम, खाते की एक इकाई और मूल्य के संग्रह के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। यह मूल्य के मानक और भुगतान के साधन के रूप में कार्य करके आर्थिक लेनदेन की सुविधा प्रदान करता है।

## मुद्रा आपूर्ति

- मुद्रा आपूर्ति का तात्पर्य किसी विशेष समय पर किसी अर्थव्यवस्था में उपलब्ध कुल धन राशि से है। यह किसी अर्थव्यवस्था में किसी भी समय जनता द्वारा विभिन्न रूपों में रखे गए धन की कुल मात्रा को संदर्भित करता है। मुद्रा आपूर्ति के मुख्य घटक जनता द्वारा रखी गई मुद्रा और वाणिज्यिक बैंकों द्वारा रखी गई शुद्ध-मांग जमा हैं।
- मुद्रा आपूर्ति आर्थिक गतिविधियों, मुद्रास्फीति और ब्याज दरों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- भारतीय अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति को सामान्यतः निम्नलिखित रूपों में मापा जाता है-

| मौद्रिक समुच्चय | अवयव |
|---|---|
| **M0** | जनता के द्वारा रखी मुद्रा + बैंक में RBI में जमा राशि + RBI के पास अन्य जमाएँ |
| M1 | जनता के पास रखी मुद्रा + वाणिज्यिक बैंकों में मांग जमाएँ + RBI के पास अन्य जमाएँ |
| M2 | M1 + डाकघरों की बचत बैंकों में रखी मांग जमाएँ |
| M3 | M1 + वाणिज्यिक बैंकों में रखी शुद्ध सावधि जमाएँ |
| M4 | जनता के पास रखी मुद्रा + वाणिज्यिक बैंकों और डाकघर बचत बैंकों में रखी मांग और सावधि जमाएँ |

- **M0** को **आरक्षित मुद्रा,** M1 और M2 को संकीर्ण मुद्रा तथा M3 और M4 को व्यापक मुद्रा (Broad Money) कहा जाता है।
- M1 सबसे अधिक तरल है जबकि M4 सबसे कम तरल है।

- M3, जिसे समग्र मुद्रा आपूर्ति भी कहा जाता है तथा यह मुद्रा आपूर्ति के लिए सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला उपाय है। RBI मौद्रिक नीति तैयार करते समय मुख्य रूप से इस समुच्चय पर ध्यान केंद्रित करती है।

महत्वपूर्ण शब्दावली:

- **$M_0$ (उच्च शक्तिशाली मुद्रा): सामान्यतया आरबीआई की कुल देनदारी को उच्च शक्ति वाली मुद्रा कहा जाता है।** इसमें प्रचलन में मौजूद भौतिक मुद्रा (सिक्के और नोट) और वाणिज्यिक बैंकों द्वारा केंद्रीय बैंक के पास अपने खातों में रखे गए भण्डार शामिल है। अर्थव्यवस्था में कुल मुद्रा आपूर्ति उच्च-शक्ति मुद्रा की मात्रा से अधिक होती है क्योंकि वाणिज्यिक बैंक अपनी जमा राशि का कुछ हिस्सा उधार देकर अतिरिक्त धन बनाते हैं।
- **मांग जमा/डिमांड डिपॉजिट:** बैंक खातों में जमा वह धन जिसे प्रायः चेक या डेबिट कार्ड के माध्यम से मांग पर उपलब्ध कराया जाता है। यह तरल होता है तथा इसे कभी भी निकाला जा सकता है। **उदाहरण**: यदि किसी चेकिंग खाते में ₹50,000 जमा हैं, तो यह एक मांग जमा है, क्योंकि इसे जब चाहें निकाला या खर्च किया जा सकता है।
- **सावधि जमा:** ये ऐसे बचत खाते हैं जिनमें एक निश्चित अवधि के लिए धन जमा किया जाता है और अवधि समाप्त होने तक बिना किसी जुर्माने के इसे निकाला नहीं जा सकता। उदाहरण : सावधि जमा

## नए मौद्रिक समुच्चय

**मुद्रा आपूर्ति: विश्लेषण और संकलन की कार्यप्रणाली पर कार्य समूह (**अध्यक्ष: डॉ. वाई. वी. रेड्डी) ने **1998** में चार नई मौद्रिक **समुच्चय** को संकलित करने की सिफारिश की थी।

| समुच्चय | संरचना |
|---|---|
| **NM0 (आरक्षित मुद्रा)** | **NM0** = प्रचलन में मुद्रा + बैंक में **RBI** की जमा राशि + **RBI** में अन्य जमा राशि |
| **NM1 (संकुचित मुद्रा)** | **NM1** = जनता के पास मुद्रा + बैंकिंग प्रणाली में चालू जमा + बचत जमा का मांग देयता भाग + **RBI** में अन्य जमा |
| **NM2** | **NM2** = **NM1** + निवासियों की अल्पकालिक सावधि जमा ($\leq$ **1** वर्ष) |
| **NM3 (विस्तृत मुद्रा)** | **NM3** = **NM2** + निवासियों की दीर्घकालिक सावधि जमा + वित्तीय संस्थानों से कॉल/सावधि निधि |
| **तरलता समष्टियाँ** | |
| **L1** | L1 = NM3 + डाकघर बचत बैंकों में जमा (राष्ट्रीय बचत पत्रों को छोड़कर) |
| **L2** | L2 = L1 + सावधि ऋण और पुनर्वित्त संस्थानों में सावधि जमा + वित्तीय संस्थानों द्वारा लिए गए सावधि ऋण + वित्तीय संस्थानों द्वारा जारी प्रमाण-पत्र जमा (CDs) |
| **L3** | L3 = L2 + गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFCs) की सार्वजनिक जमा राशि |

## मौद्रिक नीति

- मौद्रिक नीति एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे केंद्रीय बैंक द्वारा लागू किया जाता है ताकि मुद्रा आपूर्ति का प्रबंधन करके विशेष लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके, जैसे मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना, उचित विनिमय दर बनाए रखना, रोजगार के अवसर सृजित करना, और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।
- इसमें खुले बाजार परिचालन, आरक्षित आवश्यकताओं या विदेशी मुद्रा व्यापार के माध्यम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ब्याज दरों में परिवर्तन करना शामिल है।
- मौद्रिक नीति विस्तारवादी या संकुचनकारी हो सकती है।

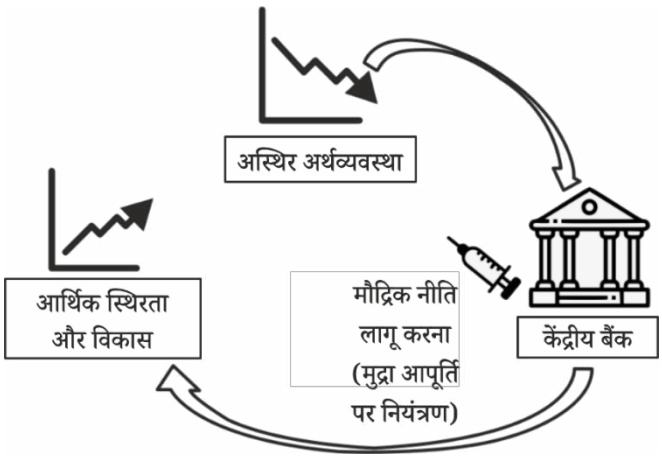

## मौद्रिक नीति के प्रकार

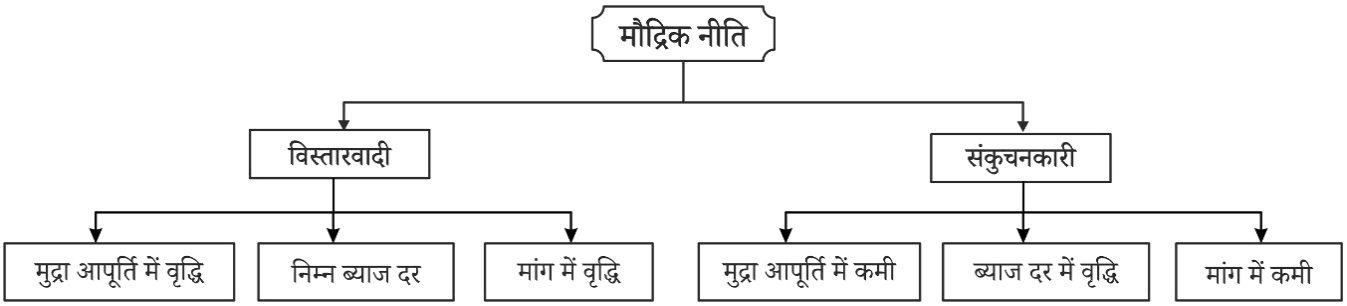


| विस्तारवादी मौद्रिक नीति | संकुचनकारी मौद्रिक नीति |
|---|---|
| ➢ लक्ष्य: अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति बढ़ाना।<br>➢ उपाय: प्रमुख ब्याज दरों में कटौती करके बाजार में तरलता बढ़ाना।<br>➢ यह नीति आमतौर पर मंदी के समय लागू की जाती है ताकि मुद्रा आपूर्ति बढ़े जिससे खपत को बढ़ावा मिले और मांग उत्पन्न हो सके। (राजकोषीय प्रोत्साहन)<br>➢ अन्य नाम: डोविश मौद्रिक नीति<br>उदाहरण: मार्च, 2020 में देश में COVID-19 स्थिति के कारण। | ➢ लक्ष्य: अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति घटाना।<br>➢ उपाय: प्रमुख ब्याज दरों में वृद्धि करके बाजार में तरलता कम करना।<br>➢ यह नीति मुद्रास्फीति की स्थिति में लागू की जाती है ताकि मुद्रा आपूर्ति घटे जिससे खपत कम हो और मांग नियंत्रित की जा सके।<br>➢ अन्य नाम: हॉकीश मौद्रिक नीति |

## RBI और मौद्रिक नीति

- भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 के अनुसार, भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) को मौद्रिक नीति लागू करने का विशेष अधिकार प्राप्त है।
- हाल के वर्षों में भारत की मौद्रिक नीति के निर्माण में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं, जिनमें मौद्रिक नीति ढांचा (MPF), मौद्रिक नीति समिति MPC) और मौद्रिक नीति प्रक्रिया (MPP) का समावेश शामिल है।

### मौद्रिक नीति ढांचा (MPF)

मई 2016 में, केंद्रीय बैंक को देश की मौद्रिक नीति के प्रबंधन के लिए विधायी शक्ति देने के लिए आरबीआई अधिनियम में संशोधन किया गया । यह ढांचा वर्तमान आर्थिक स्थितियों के आधार पर नीति (रेपो दर) निर्धारित करने और मुद्रा बाजार दरों को रेपो दर के करीब रखने हेतु तरलता को समायोजित करने पर केंद्रित है। रेपो दर में परिवर्तन मुद्रा बाजार के माध्यम से संपूर्ण वित्तीय प्रणाली को प्रभावित करता है, जिससे कुल मांग प्रभावित होती है, जो मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

### मौद्रिक नीति समिति (MPC)

- MPC छह सदस्यीय समिति है, जिसे केंद्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है।
- यह समिति भारत में मुद्रास्फीति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतिगत ब्याज दर निर्धारित करती है।
- इस समिति का गठन रघुराम राजन द्वारा किया गया था।
- MPC को वर्ष में कम से कम चार बार बैठक करनी होती है। गणपूर्ति के लिए चार सदस्यों की उपस्थिति आवश्यक है।
- प्रत्येक सदस्य का एक वोट होता है, और यदि वोट बराबर हो जाए, तो गवर्नर को निर्णायक वोट (casting vote) का अधिकार होता है।
- प्रत्येक MPC बैठक के समापन पश्चात्, अपनाए गए संकल्प को प्रकाशित किया जाता है।

**नोट: मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण**

- 2016 में अपनाई गई इस नीति के तहत भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने ±2% की सहनशीलता बैंड के साथ मुद्रास्फीति का लक्ष्य 4% निर्धारित किया है।
- यह नीति RBI को आर्थिक परिस्थितियों, जैसे विकास और मुद्रास्फीति के रुझानों के आधार पर अपनी मौद्रिक नीति में आवश्यकतानुसार बदलाव करने की अनुमति देती है।

**मौद्रिक नीति समिति, 2016**

- स्थापना: 2016
- अनुशंसित: उर्जित पटेल समिति ,2015 द्वारा
- उद्देश्य: मौद्रिक नीति के निर्णयों में पारदर्शिता और जवाबदेही लाना।
- कार्य: मुद्रास्फीति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतिगत ब्याज दर निर्धारित करना।
- मुद्रास्फीति लक्ष्य: प्रति पांच वर्ष में एक बार तय किया जाता है।
  - ✓ भारत सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से इसे तय करती है।
  - ✓ RBI की मुद्रा और वित्त रिपोर्ट (RCF) 2020-21 के अनुसार, वर्तमान मुद्रास्फीति लक्ष्य बैंड (4% ± 2%) अगले पांच वर्षों (2020-2025) के लिए उपयुक्त माना गया है।

| आयाम | विवरण |
|---|---|
| संरचना | ➢ सदस्य: 6 सदस्य (3 RBI से और 3 भारत सरकार से)<br>➢ अध्यक्ष: RBI गवर्नर<br>➢ उपाध्यक्ष: RBI के डिप्टी गवर्नर |

## मौद्रिक नीति के उपकरण

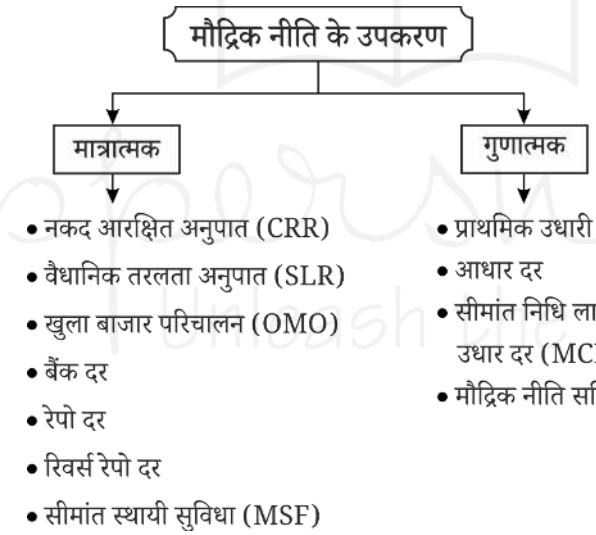


### 1. मात्रात्मक उपकरण

| उपकरण | विवरण |
|---|---|
| नकद आरक्षित अनुपात (CRR) | ➢ इसे मौद्रिक नीति समिति द्वारा निर्धारित किया जाता है।<br>➢ बैंकों को अपनी शुद्ध मांग और सावधि देयताओं (NDTL) का एक निश्चित प्रतिशत, रिजर्व बैंक के पास जमा करना होता है , जैसा कि **RBI** द्वारा निर्धारित किया गया है।<br>➢ बैंकों को यह राशि नकद के रूप में **RBI** के पास आरक्षित रखनी होती है।<br>शुद्ध मांग और समय देयता (NDTL): बैंक के पास कुल जमा की गणना सावधि जमा के साथ चालू/बचत जमा को जोड़कर की जाती है |

| | |
|---|---|
| | ➢ ब्याज: RBI के पास जमा धन पर बैंकों को कोई ब्याज नहीं मिलता है।<br>➢ **प्रभाव (Impact):**<br>✓ यदि **RBI CRR** बढ़ाता है, तो वाणिज्यिक बैंकों को **RBI** के पास अधिक राशि जमा करनी होगी, जिससे उनके पास ग्राहकों को उधार देने के लिए कम राशि बचेगी। परिणामस्वरूप: अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति कम हो जाती है।<br>✓ यदि **RBI CRR** घटाता है, तो वाणिज्यिक बैंकों को **RBI** के पास कम राशि जमा करनी होगी, जिससे उनके पास ग्राहकों को उधार देने के लिए अधिक राशि बचेगी। परिणामस्वरूप: अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति बढ़ जाती है |
| वैधानिक तरलता अनुपात (SLR) | ➢ बैंकों को अपनी जमा राशि का एक निश्चित प्रतिशत अत्यधिक तरल सरकारी प्रतिभूतियों (सोना, नकद या सरकारी प्रतिभूतियों) के रूप में रखना होता है।<br>➢ इसे सरकारी प्रतिभूति के रूप में रखा जाता है।<br>➢ यह सुरक्षा राशि होती है, जिस पर बैंक को RBI से ब्याज मिलता है।<br>**आरक्षित अनुपात** $= CRR + SLR$<br>**प्रभाव (Impact):**<br>➢ यदि RBI SLR बढ़ाता है, तो वाणिज्यिक बैंकों के पास ग्राहकों को उधार देने के लिए कम राशि बचती है। परिणामस्वरूप: अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति कम हो जाती है।<br>➢ यदि RBI SLR घटाता है, तो वाणिज्यिक बैंकों के पास ग्राहकों को उधार देने के लिए अधिक राशि बचती है। परिणामस्वरूप: अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति बढ़ जाती है। |
| खुला बाजार परिचालन (OMO) | ➢ बाजार में मुद्रा आपूर्ति को नियंत्रित करने के लिए RBI द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय/विक्रय।<br>**सरकारी प्रतिभूतियाँ (G-Sec)**<br>प्रतिभूति की परिपक्वता पर निवेशित मूलधन के पूर्ण पुनर्भुगतान का वादा।<br>इस प्रकार सरकार विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त करती है।<br>➢ G-Sec विक्रय: बाजार में मुद्रा आपूर्ति कम होती है।<br>✓ RBI मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए प्रतिभूतियाँ बेचती है।<br>➢ G-Sec क्रय: बाजार में मुद्रा आपूर्ति बढ़ती है ।<br>✓ RBI अर्थव्यस्था में तरलता प्रवाहित करके अपस्फीति को नियंत्रित करने के लिए प्रतिभूतियां खरीदता है |
| बैंक दर | ➢ वह दर जिस पर वाणिज्यिक बैंक आरबीआई से पैसा उधार लेते हैं, जब उनके पास भंडार की कमी होती है।<br>➢ RBI ने बैंक दर को रेपो दर से 0.25% अधिक निर्धारित किया है।<br>➢ यदि बैंक दर में वृद्धि होती है, तो अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति घट जाती है, और इसके विपरीत, यदि बैंक दर घटती है तो मुद्रा आपूर्ति बढ़ जाती है। |
| सीमांत स्थायी सुविधा (MSF) | ➢ 2011 में शुरू किया गया ।<br>➢ यह एक केवल एक रात या **24** घंटे सुविधा है , 1 दिन के लिए बैंक **RBI** से उधार ले सकते हे।<br>➢ आपातकालीन स्थिति जब अंतर-बैंक तरलता पूरी तरह से समाप्त हो जाती है, उस स्थिति में वाणिज्यिक बैंकों के लिए **RBI** से उधार लेने की सुविधा ।<br>➢ इसके तहत **SLR** की सरकारी प्रतिभूतियो को गिरवी रखा जा सकता है ।<br>➢ इसकी दर हमेशा रेपो दर से अधिक निर्धारित की जाती है। |
| स्थायी जमा सुविधा (**SDF**) | **SDF** एक सुविधा है जिसके तहत अधिशेष तरलता सोखने के लिये किसी भी प्रकार की जमानत (**Collateral**) की आवश्यकता नहीं होती है । |

| तरलता समायोजन सुविधा (LAF) | |
|---|---|
| रेपो दर | ➢ वह दर जिस पर RBI वाणिज्यिक बैंकों को उनकी अल्पकालिक (90 दिनों तक) तरलता आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऋण देती है<br>✓ बाद में उन्हीं सरकारी परिसंपत्तियों को पुनः खरीदती है।<br>➢ यह दर दो प्रकार की होती है :<br>✓ ओवरनाइट रेपो: 24 घंटे के लिए उधार लिया जाता है<br>✓ टर्म रेपो: 7,14,21 आदि दिनों के लिए उधार लिया जाता है<br>➢ **प्रभाव:**<br>✓ यदि रेपो रेट घटाया जाता है, तो उधारी लेना सस्ता हो जाता है, जिससे व्यय और निवेश में वृद्धि होती है।<br>✓ यदि रेपो रेट बढ़ाया जाता है, तो उधारी लेना महंगा हो जाता है, जिससे व्यय और निवेश में कमी आती है। |
| रिवर्स रेपो दर | ➢ इस दर के तहत RBI रातों-रात बैंकों से तरलता को अवशोषित करती है<br>✓ इसका उपयोग LAF के अंतर्गत संपार्श्विक के रूप में रखी गई योग्य सरकारी प्रतिभूतियों के बदले में किया जाता है ।<br>➢ इसकी दर रेपो दर से कम होती है ।<br>➢ **प्रभाव:**<br>✓ उच्च रिवर्स रेपो रेट होने पर बैंकों को अपना धन केंद्रीय बैंक (RBI) के पास जमा करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है, जिससे ऋण देने और खर्च करने के लिए उपलब्ध धनराशि कम हो जाती है।<br>✓ निम्न रिवर्स रेपो रेट होने पर बैंक अधिक ऋण देने के लिए प्रेरित हो सकते हैं, जिससे आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है। |

**मौद्रिक नीति का प्रभावी प्रसारण (जनवरी 2025 – जनवरी 2026)**

| घटक | अनुमानित स्तर (जनवरी 2025) | जनवरी 2026 तक | मुख्य निष्कर्ष |
|---|---|---|---|
| रेपो रेट (Repo Rate) | लगभग 6.50% | लगभग 5.50% | सहायक (Accommodative) मौद्रिक रुख का संकेत देता है |
| स्टैंडिंग डिपॉजिट सुविधा (SDF) | लगभग 6.25% | लगभग 5.25% | अल्पकालिक मनी मार्केट दरों को स्थिर करता है |
| मार्जिनल स्टैंडिंग फैसिलिटी (MSF) | लगभग 6.75% | लगभग 5.75% | ओवरनाइट दरों के लिए ऊपरी सीमा तय करता है |
| वेटेड एवरेज कॉल रेट (WACR) | लगभग 6.40–6.50% | लगभग 5.40–5.50% | रेपो रेट को नज़दीकी से ट्रैक करता है → मजबूत प्रसारण को दर्शाता है |

## गुणात्मक उपकरण

गुणात्मक उपकरण (जैसे कि प्राथमिक क्षेत्र ऋण (PSL) और ऋण-से-मूल्य (LTV) अनुपात) अर्थव्यवस्था के विशिष्ट क्षेत्रों के ऋण आवंटन को विनियमित करते हैं। मात्रात्मक उपकरणोंके विपरीत जो, ऋणों की समग्र मात्रा का प्रबंधन करते है गुणात्मक उपकरण इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि ऋण किस प्रकार से वितरित हो रहा है।

| उपकरण | विवरण |
|---|---|
| मार्जिन आवश्यकताएँ/ ऋण-से-मूल्य (Loan to Value) | ➢ मार्जिन का तात्पर्य ऋणों के लिए दी गई प्रतिभूतियों के मूल्य और वास्तव में दिए गए ऋणों के मूल्य के बीच अंतर से है।<br>उदाहरण: यदि गिरवी रखी गई संपत्ति का मूल्य ₹1 लाख है और LTV 80% है, तो अधिकतम ₹80,000 ही ऋण के रूप में दिया जा सकता है।<br>➢ RBI मांग को बढ़ाने या कम करने के लिए इस प्रतिशत को बदल सकती है।<br>➢ यदि आरबीआई किसी विशेष क्षेत्र में ऋण के प्रवाह को नियंत्रित करना चाहता है, तो वह उस क्षेत्र के लिए उच्च मार्जिन तय करता है। परिणामस्वरूप, ग्राहक उस क्षेत्र के लिए कम ऋण लेंगे। |
| उपभोक्ता ऋण विनियमन (Consumer Credit Regulation) | ➢ उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की खरीद के लिए वाणिज्यिक बैंकों द्वारा उपलब्ध कराया गया ऋण (किस्तों में) उपभोक्ता ऋण के रूप में जाना जाता है।<br>➢ यदि कुछ उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की अतिरिक्त मांग होती है जिसके कारण उनकी कीमतें ऊंची हो जाती हैं, तो आरबीआई निम्लिखित उपाय द्वारा उपभोक्ता ऋण को कम कर देता है:<br>1. डाउन पेमेंट बढ़ा कर, और/या<br>2. ऐसे क्रेडिट के पुनर्भुगतान की किस्तों की संख्या कम कर। |
| प्राथमिक उधारी क्षेत्र | ➢ RBI यह सुनिश्चित करता है कि बैंक अपनी निधियों का एक निश्चित हिस्सा कुछ विशेष क्षेत्रों में आवंटित करें।<br>➢ उदाहरण: कृषि, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME), निर्यात ऋण, शिक्षा, आवास, सामाजिक बुनियादी ढांचा, तथा नवीकरणीय ऊर्जा आदि। |
| नैतिक अनुनय | ➢ RBI निर्देश जारी करता है, बैठकें करता है, अनुनय और दबाव का उपयोग करता है, निरीक्षण करता है, और नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से अनुवर्ती कार्रवाई करता है। |
| प्रत्यक्ष कार्रवाई | जब कोई वाणिज्यिक बैंक आरबीआई के साथ सहयोग नहीं करता है तो RBI सीधी कार्रवाई करता है जैसे:<br>➢ जुर्माना लगाना<br>➢ असहयोगी बैंकों पर प्रतिबंध लगाना<br>➢ अपने बिलों में पुनः छूट देने से इंकार करना<br>➢ ऋण आपूर्ति से वंचित करना |

**आधार दर**

➢ यह वह न्यूनतम दर है जिसके नीचे बैंक उपभोक्ताओं को ऋण नहीं दे सकते।

**सीमांत निधि लागत आधारित उधार दर (MCLR)**

➢ यह **सबसे कम ब्याज दर** होती है जिस पर कोई बैंक ऋण दे सकता है। यह एक **अवधि-आधारित आंतरिक बेंचमार्क दर** है, जिसका अर्थ है कि यह दर बैंक द्वारा **अंदरूनी रूप से निर्धारित** की जाती है, और यह **ऋण चुकाने की शेष अवधि** पर आधारित होती है।

## उपकरणों और मुद्रास्फीति के मध्य संबंध

| उपकरण | मुद्रास्फीति के समय | अपस्फीति के समय |
|---|---|---|
| आरक्षित अनुपात (CRR, SLR) | बढ़ाएँ | घटाएं |
| खुला बाजार परिचालन (OMO) | RBI द्वारा नकदी/तरलता जुटाने के लिए प्रतिभूतियां को बेचना | RBI द्वारा बाजार में नकदी की आपूर्ति के लिए प्रतिभूतियां खरीदना |
| बैंक दर | बढाएं | घटाएं |
| रेपो दर | बढाएं | घटाएं |
| रिवर्स रेपो दर | इसका मूल्य रेपो के साथ जुड़ा हुआ है, इसलिए इसे स्वतंत्र रूप से बढ़ाया/घटाया नहीं जा सकता है। | |
| सीमांत स्थायी सुविधा (MSF) | इसका मूल्य रेपो से जुड़ा हुआ है, इसलिए इसे स्वतंत्र रूप से बदला नहीं जा सकता। इसके अलावा MSF = अस्थायी अग्निशमन, नकदी कुप्रबंधन। | |

## RBI द्वारा नीतिगत रुख

| RBI के विभिन्न नीतिगत रुख | |
|---|---|
| समायोजक (Accommodative) | ➢ केंद्रीय बैंक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए मुद्रा आपूर्ति को बढ़ाता है।<br>➢ इसमें ब्याज दरों में कटौती की जाती है, लेकिन दरों में वृद्धि की संभावना नहीं होती है ।<br>➢ यह तब अपनाया जाता है जब वृद्धि को नीति समर्थन की आवश्यकता होती है और मुद्रास्फीति तत्काल चिंता का विषय नहीं होती। |
| तटस्थ (Neutral) | ➢ केंद्रीय बैंक व्यापक आर्थिक स्थितियों के आधार पर ब्याज दरों को कम या बढ़ा सकता है। |
| आक्रामक (हॉकिश) | ➢ इस रुख में केंद्रीय बैंक की प्राथमिकता मुद्रास्फीति को कम रखना होता है।<br>➢ बैंक मुद्रा आपूर्ति को कम करने के लिए ब्याज दरों में वृद्धि कर सकती है, जिससे मांग को नियंत्रित किया जा सकता है।<br>➢ यह सख्त मौद्रिक नीति का संकेत देती है। |
| अंशांकित (कैलिब्रेटेड) सख्त नीति | ➢ दर में वृद्धि एक सुनियोजित तरीके से की जाती है।<br>➢ बैंक हर बार दरों में वृद्धि नहीं करता, लेकिन बढ़ोतरी की प्रवृत्ति रहती है। |